Request to reprint rare Sanskrit books and setting up of Sanskrit education centres

श्री रोडमल नागर (राजगढ़) : सभापति महोदया, प्राचीन काल से ही वेद, वेदांग एवं शास्त्र अध्ययन में अनिवार्य रूप से संस्कृत भाषा का महत्व रहा है । संस्कृत को विश्व की सबसे पुरातन भाषाओं में से एक माना जाता है । वैदिक काल में संस्कृत एक अखिल भारतीय वैज्ञानिक भाषा हुआ करती थी और देश में अधिकांश भाषाओं का जन्म संस्कृत से ही हुआ है । यह भाषा किसी न किसी तरह की आधुनिक व्युत्पत्तियों और क्षेत्रीय बोलियों के कारण अपना अस्तित्व खोती जा रही है ।

अत: सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करता हूं कि दुर्लभ संस्कृत पुस्तकों का पुनर्मुद्रण कर भारतीय संस्थानों, प्रौद्योगिकी, आयुर्वेद संस्थानों, आधुनिक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में संस्कृत शिक्षण केंद्रों की स्थापना कर एवं उच्च गुणवत्ता युक्त आयुर्वेद विद्वान तैयार करने हेतु आयुष पाठ्यक्रमों की परीक्षा संस्कृत भाषा में वरीयता देकर अनुग्रहित करें ।